टिप्पणी

23

मानव विकास

हम जब भी विकास के बारे में सोचते हैं तो सामान्य रूप से भौतिक और आर्थिक विकास के बारे में सोचते हैं। विकास सामग्री में घर, जमीन- जायदाद, मोटर वाहन, आभूषण आदि शामिल हो सकते हैं। जब भी या जहां भी आवश्यकता होती है, इन सभी भौतिक संपत्तियों को धन के रूप में परिवर्तित किया जाता है। आज तक पूरी दुनिया, दो समूहों में विभाजित है- विकसित देश और विकासशील देश। यह वर्गीकरण ज्यादातर आर्थिक विकास के स्तर पर आधारित है। हालांकि अभी भी यह प्रवृत्ति जारी है लेकिन विकास के प्रति सोच में बदलाव लाया गया है। विशुद्ध रूप से आर्थिक आयाम से हट कर समग्र सामाजिक-आर्थिक आयाम के आधार पर विकास को मापने पर जोर दिया गया है। 1990 के बाद से, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.) प्रत्येक वर्ष मानव विकास सूचकांक (एच.डी.आई.) की गणना करता है और इसे एक रिपोर्ट के रूप में प्रकाशित करता है जिसे मानव विकास रिपोर्ट (एच.डी.आर.) के रूप में जाना जाता है। यह रिपोर्ट प्रत्येक वर्ष प्रकाशित की जाती है जिसमें परिभाषित मापदंडों के आधार पर लगभग सभी देशों को उच्च, मध्यम और निम्न श्रेणी में रखा जाता है।

इस पाठ में हम मानव विकास सूचकांक को मापने की अवधारणा और प्रक्रिया के बारे में जानेंगे। हम दुनिया के विभिन्न देशों के बीच भारत की स्थिति का भी पता लगाएंगे।

साथ ही, जहां तक मानव विकास सूचकांक का संबंध है, हम भारत के विभिन्न राज्यों की स्थिति का भी विश्लेषण करेंगे। अंत में, हम अपने देश में मानव विकास में सुधार के लिए कुछ उपाय सुझाएगें।

सीखने के प्रतिफल

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् शिक्षार्थी:

- मानव विकास और मानव विकास सूचकांक शब्द को परिभाषित करते हैं;
- मानव विकास के क्षेत्रीय प्रतिमानों का वर्णन करते हैं;

टिप्पणी

- समावेशी मानव विकास में सुधार की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

23.1 मानव विकास की अवधारणा

क्या आप जानते हैं कि 'मानव विकास' शब्द किसने दिया था? 1990 में अर्थशास्त्री डॉ. महबूब अल हक ने मानव विकास की अवधारणा पेश की। इस अवधारणा का उपयोग मानव विकास सूचकांक के निर्माण के लिए किया गया। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.) द्वारा प्रकाशित मानव विकास रिपोर्ट-1990 के उद्घाटन अंक में लेखक ने मानव विकास को "लोगों के लिए विकल्पों को विस्तृत करने के साथ-साथ कल्याण का स्तर बढ़ाने की एक प्रक्रिया" के रूप में परिभाषित किया है। मानव विकास की अवधारणा 'स्वतंत्रता के रूप में विकास' के विचार पर आधारित है। यह मानवीय क्षमताओं के निर्माण के बारे में है- कि वे कितने कार्य कर सकते हैं और वे क्या कार्य हो सकते हैं। व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकार बहुत मायने रखते हैं। लेकिन यह स्वतंत्रता और अधिकार कुछ लोगों के लिए प्रतिबंधित है क्योंकि वे गरीब हैं, अशिक्षित हैं, उनके साथ भेदभाव किया जाता है, हिंसक संघर्ष आदि से उन्हें खतरा है। इन्हें प्राप्त करने के लिए हमारी विकास प्रक्रिया को फिर से उन्मुख करने की आवश्यकता है। दूसरे शब्दों में विकास को लोगों के इर्द-गिर्द घूमना चाहिए ना कि लोगों को विकास के इर्द-गिर्द घूमना चाहिए।

अवधारणा के बारे में अधिक विस्तार से जानने के लिए हम इस अवधारणा को प्रतिपादित करने वाले महबूब अल हक के लेखन का संदर्भ लें। उन्होंने 'रिफ्लेक्शन ऑन ह्यूमन डेवलपमेंट' नामक अपनी पुस्तक में मानव विकास के चार स्तंभों के बारे में चर्चा की है; इक्विटी, स्थिरता, उत्पादकता और सशक्तिकरण। आइए, संक्षेप में इनकी चर्चा करें-

1. **इक्विटी (न्याय पूर्ण हिस्सेदारी) :** क्या आप इक्विटी का अर्थ बता सकते हैं? सरल शब्दों में इसका अर्थ, लिंग, जाति, आय और सामाजिक प्रभाव के भेदभाव के बिना सभी को समान अवसर प्रदान करना है। क्या अब आप इक्विटी और समानता के बीच अंतर कर सकते हैं?

2. **धारणीय विकास:** दूसरा स्तंभ धारणीय विकास है जिसका अर्थ है आने वाली पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए संसाधनों तक निरंतर पहुंच और उपलब्धता प्रदान करना। दूसरे शब्दों में, आने वाली सभी पीढ़ियों के पास आज तक उपयोग किए जाने वाले न्यूनतम संसाधनों तक पहुंच होनी चाहिए। आप अगले माड्यूल में धारणीय और सतत विकास के बारे में विस्तार से पढ़ेंगे।

3. **उत्पादकता:** महबूब अल हक के अनुसार तीसरा स्तंभ उत्पादकता है। यह अपने काम के वितरण के लिए मानव संसाधनों की क्षमताओं में लगातार सुधार को संदर्भित करता है। अंतत: लोग किसी भी राष्ट्र के लिए वास्तविक धन है यदि वे अधिक कुशल है तो उनके मूल्य/अहमियत भी निश्चित रूप से बढ़ेगी।

4. **सशक्तिकरण:** मानव विकास का चौथा और अंतिम स्तंभ सशक्तिकरण है। आजकल आप समाज के वंचित वर्गों के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के लिए राज्य सरकारों और भारत

टिप्पणी

सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में सुन रहे होंगे। इसका अर्थ क्या है? यह एक प्रकार की क्षमता को संदर्भित करता है जो मानव में स्वतंत्रता का विकल्प उत्पन्न करता है। मानव विकास को सशक्त बनाने के लिए सुशासन और लोकोन्मुख नीति की आवश्यकता होती है।

यदि आप इस खंड के आरंभ में दी गई मानव विकास की परिभाषा को ध्यान से पढ़ेंगे तो आप परिभाषा में इन चार अवधारणाओं का प्रतिबिंब पा सकते हैं।

मानव विकास की अवधारणा और उसके चार स्तंभों को जानने के बाद, क्या आप आर्थिक विकास और मानव विकास की अवधारणा के बीच अंतर कर सकते हैं? आर्थिक विकास और मानव विकास के बीच बुनियादी अंतर यह है कि आर्थिक विकास पूरी तरह से आय में वृद्धि पर केंद्रित है जबकि मानव विकास, मानव जीवन के सभी पहलुओं के विकास में विश्वास करता है चाहे वह आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि हो। आर्थिक पहलू में मानव विकास आवश्यक तत्वों में से एक है। इसके पीछे मूल विचार यह है आय का उपयोग है न कि आय, स्वयं मानव विकल्पों को तय करती है। चूंकि, एक राष्ट्र की वास्तविक संपत्ति उसके लोग हैं, इसलिए विकास का लक्ष्य मानव जीवन का संवर्धन होना चाहिए।

मानव विकास की आवश्यकता: मानव विकास की अवधारणा को जानने के बाद आप सोच रहे होंगे कि विकास की प्रगति को मापने के लिए एक और अवधारणा बनाने की आवश्यकता है। पॉल स्ट्रीटन, विकास अर्थशास्त्री ने मानव विकास के पक्ष में छह कारणों की पहचान की। ये कारण इस प्रकार है:

1. परिस्थितियों और लोगों की पसंद को बढ़ाने के लिए विकास की संपूर्ण कवायद का अंतिम उद्देश्य मानव को बेहतर बनाना है।

2. मानव विकास उच्च उत्पादकता का साधन है एक सुपोषित, स्वस्थ, शिक्षित, कुशल, सतर्क, श्रम-बल सबसे अधिक उत्पादक संपत्ति है। इसलिए इन क्षेत्रों में निवेश उत्पादकता के आधार पर उचित है।

3. यह जनसंख्या की वृद्धि दर को कम करने में मदद करता है।

4. मानव विकास भौतिक पर्यावरण के अनुकूल है। गरीबी कम होने पर वनों की कटाई, मरुस्थलीकरण और मिट्टी के कटाव में कमी आती है।

5. बेहतर रहने की स्थिति और कम गरीबी, स्वस्थ नागरिक समाज, आर्थिक और सामाजिक स्थिरता में योगदान करते है।

6. मानव विकास समाज में नागरिक अशांति को कम करने और राजनीतिक स्थिरता को बढ़ाने में भी मदद करता है।

मानव विकास की अवधारणा का अध्ययन करने के बाद, आइए भाग 23.2 में मानव विकास के मापन को समझें।

टिप्पणी

23.2 मानव विकास का मापन

मानव विकास के स्तरों को मापने के लिए, तीन आयामों के तहत संकेतकों की एक श्रेणी प्रस्तावित की गयी थी। इसलिए, मानव विकास सूचकांक (एच.डी.आई.) एक समग्र सूचकांक है जो किसी देश में मानव विकास के तीन बुनियादी आयामों की औसत उपलब्धियों को मापता है। यह बुनियादी आयाम लम्बा स्वस्थ जीवन, ज्ञान और जीने का अच्छा स्तर।

उपर्युक्त आयामों को निम्नलिखित संकेतकों द्वारा मापा जाता है।

1. लम्बे और स्वस्थ जीवन को जीवन प्रत्याशा से मापा जाता है।
2. ज्ञान को स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष और स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्षों से मापा जाता है।
3. जीवन के स्तर को प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद से मापा जाता है (अमरीकी डालर में क्रय शक्ति से)

लेकिन हमें पता होना चाहिए कि इसका उद्देश्य मानव विकास की पूरी तस्वीर देना नहीं है बल्कि एक ऐसा उपाय प्रदान करना है जो विकास के पारंपरिक माप यानी आय से हटकर हो। इसीलिए एच.डी. आई. (मानव कल्याण) में बदलाव तथा विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की तुलना करने के लिए एक बैरोमीटर है।

मानव विकास सूचकांक (एच.डी.आई.) के अलावा, मानव विकास के चार अन्य संकेतकों का चयन किया गया है जिनका पिछले तीन दशकों से मानव विकास रिपोर्ट द्वारा उपयोग किया गया है। ये हैं-

i. विकासशील देशों के लिए मानव गरीबी सूचकांक (HPI-1)
ii. चयनित ओ.ई.सी.डी. देशों के लिए मानव गरीबी सूचकांक (HPI-2)
iii. लिंग संबंधी विकास सूचकांक (GDI)
iv. लैंगिक सशक्तीकरण माप (GEM)

लिंग संबंधी विकास सूचकांक (GDI) लैंगिक सशक्तिकरण माप (GEM) को वर्ष 1995 में एक साथ पेश किया गया था जबकि मानव गरीबी सूचकांक (HPI) को वर्ष 1997 में पेश किया गया था। दो सूचकांक नामत: HPI-1, जो विकासशील देशों में गरीबी को मापता है, और HPI-2, जो OCED विकसित अर्थव्यवस्थाओं में गरीबी को मापता है। उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि भारत का मूल्यांकन HPI-1 के तहत किया जाता है।

ऊपर बताए गए पांच सूचकांकों में से एच. डी. आई. (HDI), एच. पी.आई. -1 (HPI-1) और जी. डी. आई. (GDI) की गणना तीन सामान्य आयामों अर्थात् वृहद और स्वस्थ जीवन, ज्ञान, और जीने के स्तर के आधार पर की जाती है। लेकिन कुछ संकेतक इन आयामों के भीतर भिन्न है। आइए नीचे दी गई तालिका 23.1 से हम उनकी समानता और अंतर को जानते हैं।

टिप्पणी

तालिका 23.1 एच.डी.आई. (HDI), एच.पी.आई.-1 (HPI-1) और जी.डी.आई. (GDI) में प्रयुक्त आयामों का तुलनात्मक विश्लेषण

क्रम संख्या	सूचकांक	एच.डी.आई. (HDI)	एच.पी. आई. -1 (HPI-1)	जी.डी.आई. (GDI)
1.	वृहद और स्वस्थ जीवन	● जन्म के समय 'जीवन प्रत्याशा'	● जन्म के समय 40 वर्ष की आयु तक न पहुंच पाने की सम्भावना	● जन्म के समय महिला और पुरुष जीवन की प्रत्याशा
2.	ज्ञान	● स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष ● स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष	● वयस्क साक्षरता दर	● 25 वर्ष और उससे अधिक आयु के महिला और पुरुष वयस्कों के लिए स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष ● महिला और पुरुषों के लिए स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष
3.	जीने का एक मानक स्तर	● प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (अमेरिकी डॉलर) में क्रय शक्ति)	● आबादी का प्रतिशत जो बेहतर जल के स्रोत का उपयोग नहीं कर रहा है। ● आयु के अनुसार कम वजन वाले बच्चों का प्रतिशत।	● महिला और पुरुषों द्वारा अर्जित अनुमानित आय

अब तक आप मानव विकास के महत्व और UNDP द्वारा उपयोग किए जाने वाले संकेतकों HDI, GDI और HPI-1 के बारे में समझ गए होंगे। अब हम मानव विकास के संबंध में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की स्थिति पर नजर डालेंगे। हम भारत में मानव विकास के निम्न स्तर के कारणों का भी पता लगाने का प्रयास करेंगे।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 23.1

1. मानव विकास सूचकांक क्या है?

2. मानव विकास और आर्थिक विकास में अंतर स्पष्ट कीजिए?

3. एच.डी.आई. को मापने के लिए उपयोग किए जाने वाले तीन आयामों और उनसे संबंधित सूचकों के नाम लिखिए।

   (i)

   (ii)

   (iii)

23.3 भारतः मानव विकास सूचकांक की प्रवृति (HDI)

मानव विकास रिपोर्ट 2021-2022 के अनुसार विश्व के 191 देशों में भारत का 133वां स्थान था। सभी 191 देशों को चार श्रेणियों में बांटा गया था। ये थे बहुत उच्च, उच्च, मध्यम और निम्न। जिन देशों का मान 0.800 और उससे अधिक था, उन्हें बहुत उच्च समूह में रखा गया, जिन देशों का मान 0.700 से 0.799 तक था उन्हें उच्च मानव विकास के रूप में स्थान दिया गया, जिन देशों का मान 0.550 से 0.699 के बीच था उन्हें मध्यम श्रेणी में रखा गया और जिन देशों का मान 0.550 से कम था उन्हें निम्न मानव विकास वाले देशों की श्रेणी में रखा गया।

मानव विकास रिपोर्ट 2021-2022 के अनुसार विश्व के 191 देशों में भारत का स्थान 132वां है। भारत को मध्यम स्तर की श्रेणी की तालिका में लगभग सबसे नीचे रखा गया था।

हमारे पड़ोसी देश जैसे चीन (78), श्रीलंका (73), मालदीव (90) और भूटान (127) भारत की स्थिति से काफी ऊपर रहे। अन्य पड़ोसी देशों जैसे म्यांमार (149), पाकिस्तान (161) और नेपाल(143) को भारत से नीचे रखा गया। अगर हम वैश्विक स्तर पर तुलना करें तो भारत के नीचे के ज्यादातर अफ्रीका के हैं और बाकी कुछ देश एशिया के हैं।

सभी चार मापदंडों का विश्लेषण हमें वर्तमान स्थिति के बारे में एक बेहतर तस्वीर प्रदान करता है। इन चार में से भारत तीन मानकों पर पीछे रहा है और एक पर सुधार हुआ है। पहला, स्वास्थ्य के क्षेत्र में जीवन प्रत्याशा 69.7 से गिरकर 67.2 वर्ष हो गई है। जहां तक शिक्षा के दो संकेतकों का संबंध है, स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्षों में गिरावट आई है, लेकिन स्कूली शिक्षा के औसत वर्षों में वृद्धि देखी गई है। यह गिरावट कोरोना महामारी के दौरान स्कूल बंद होने के कारण है। अंत में, जीवन स्तर आता है जहां भारत में प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (जी.एन.आई. GNI) $6,681 से गिरकर $6,590 हो गई है।

टिप्पणी

तालिका 23.2: भारत: भारत में 1990 से 2001 तक मानव विकास सूचकांक

वर्ष	1990	1995	2000	2005	2010	2015	2020	2021
	0.434	0.438	0.491	0.534	0.575	0.629	0.642	0.634

यदि हम समय के साथ भारत की स्थिति को देखें तो निश्चित रूप से कह सकते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में इसमें बहुत सुधार हुआ है। पिछले 31 वर्षों (1990–2021) के दौरान यह देखा गया है कि भारत ने 2019 तक मानव विकास के स्कोर में लगातार सुधार किया है। दरअसल, गिरावट 2019 (0.645) के बाद शुरू हुई थी। वर्ष 2020 की तुलना में वर्ष 2021 में भी गिरावट आई है (तालिका 23.2), यह मुख्य रूप से कोरोना महामारी के कारण हुआ। ऐसा केवल भारत के साथ ही नहीं हुआ है, बल्कि अधिकांश विकसित देशों के साथ भी हुआ है जो पहले से ही बहुत ऊँची और ऊँची श्रेणी में हैं।

यह सुधार काफी नहीं है। एशिया और अफ्रीका में कई छोटे देश जैसे फिजी, मंगोलिया, ट्यूनीशिया आदि भारत से काफी ऊपर हैं। मध्यम मानव विकास श्रेणी (0.550–0.699) में शीर्ष देशों में स्थान पाने के लिए भारत को बहुत मेहनत करनी होगी। यदि वर्तमान प्रवृत्ति जारी रहती है तो इसे उच्च मानव विकास श्रेणी में प्रवेश करने के लिए न्यूनतम 30 वर्ष की आवश्यकता और इसके लिए विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे सामाजिक क्षेत्र में कठोर प्रयास और विशेष रूप से आर्थिक क्षेत्र में गरीबी में कमी की आवश्यकता है ।

भारत को मानव विकास के निचले पायदान पर रखने के कुछ कारण निम्नलिखित हैं (a) जनसंख्या में तेजी से वृद्धि (b) बड़ी संख्या में निरक्षर वयस्क और सकल नामांकन अनुपात का कम होना (c) ड्रॉपआउट की उच्च दर (d) शिक्षा और स्वास्थ्य पर अपर्याप्त सरकारी व्यय (e) कम वजन वाले बच्चों के साथ-साथ कुपोषित लोगों का एक बड़ा हिस्सा (f) स्वच्छता की खराब स्थिति और जीवनरक्षक दवाओं तक कम पहुंच।

एच.डी.आई. (HDI) के अलावा, जहां तक लैंगिक विकास सूचकांक (जी.डी.आई. GDI) और मानव गरीबी सूचकांक (एच.पी.आई. HPI) का संबंध है वहां भी भारत का प्रदर्शन बहुत उत्साहजनक नहीं है। मानव विकास रिपोर्ट, 2021–2022 के अनुसार, भारत का जी.डी.आई. (GDI) 0.849 है जो विश्व औसत से काफी पीछे है। जैसा कि तालिका 23.1 में उल्लेख किया गया है कि जी.डी.आई. जेंडर के आधार पर एच.डी.आई. को मापता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 23.2

1. मानव विकास रिपोर्ट-2021-2022 के अनुसार मानव विकास सूचकांक में भारत का कौन-सा स्थान है?

2. मानव विकास रिपोर्ट, 2021-2022 के अनुसार भारत का H.D.I. कितना था?

23.3 मानव विकास सूचकांक - राज्य-स्तरीय विश्लेषण

अब तक हमने भारत सहित पूरी दुनिया में मानव विकास की अवधारणा, उसके माप और स्थिति का अध्ययन किया है। लेकिन भारत के भीतर विविधताएं हैं। कुछ राज्य अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं और कुछ राज्य अभी भी पिछड़े हुए हैं। यू.एन.डी.पी. (UNDP) की मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार भारत के विभिन्न राज्यों को विभिन्न श्रेणियों में श्रेणीबद्ध करने का प्रयास किया गया। यू.एन.डी.पी. (UNDP) के ग्लोबल डेटा सेंटर ने उप-राष्ट्रीय स्तर पर भी डेटा का विश्लेषण किया है। नीचे दिए गए सभी अट्ठाईस राज्यों के मानव विकास सूचकांक (HDI) वर्ष 1990 और वर्ष 2021 के लिए दिए गए हैं।

तालिका 23.3: भारत: राज्यों का मानव विकास सूचकांक, 1990 और 2021

क्रम संख्या	राज्य	1990	2021
1	आंध्र प्रदेश	0.427	0.630
2	अरूणाचल प्रदेश	0.442	0.665
3	असम	0.412	0.597
4	बिहार	0.379	0.571
5	गोवा	0.557	0.605
6	गुजरात	0.474	0.638
7	हरियाणा	0.471	0.691
8	हिमाचल प्रदेश	0.484	0.703
9	जम्मू और कश्मीर	0.498	0.699
10	झारखंड	0.562	.589

टिप्पणी

11	कर्नाटक	0.447	0.667
12	केरल	0.550	0.752
13	मध्य प्रदेश	0.407	0.596
14	महाराष्ट्र	0.498	0.688
15	मणिपुर	0.499	0.678
16	मेघालय	0.461	0.643
17	मिजोरम	0.531	0.688
18	नागालैंड	0.539	0.670
19	ओडिशा	0.402	0.597
20	पंजाब	0.501	0.694
21	राजस्थान	0.406	0.638
22	सिक्किम	0.546	0.702
23	तमिलनाडु	0.475	0.686
24	तेलंगाना	0.624	0.647
25	त्रिपुरा	0.449	0.629
26	उत्तर प्रदेश	0.398	0.592
27	उत्तराखंड	0.627	0.672
28	पश्चिम बंगाल	0.443	0.624
29	भारत	0.434	0.633

यदि हम उपरोक्त तालिका में दिए गए पैटर्न का विश्लेषण करें तो देखा जा सकता है कि पिछले तीस वर्षों (1990-2021) में भारत के सभी राज्यों में महत्वपूर्ण सुधार हुए हैं।

हालाँकि, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, प्रगति भिन्न-भिन्न है। नीचे दी गई तालिका में सभी अट्ठाईस राज्यों को मानव विकास रिपोर्ट द्वारा सुझाई गई चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

टिप्पणी

तालिका 23.4: भारत के राज्यों के बीच मानव विकास सूचकांक के स्तर, 2021

क्रम संख्या	एच.डी.आई. (HDI) का स्तर	रेंज	राज्य का नाम
1.	अति उच्च	0.800 से ऊपर	शून्य
2.	उच्च	0.700 – 0.799	केरल, हिमाचल प्रदेश और सिक्किम
3.	मध्यम	0.550 – 0.699	आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, तेलंगाना, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल।
4.	कम	0.550 से कम	शून्य

ऊपर दी गई तालिका का यदि विश्लेषण करें तो पाएंगे कि देश का एक भी राज्य अति उच्च श्रेणी (0.800 और उससे ऊपर) में नहीं है। केरल, हिमाचल प्रदेश और सिक्किम केवल तीन राज्य हैं जो उच्च मानव विकास की श्रेणी में हैं। शेष पच्चीस राज्य मानव विकास की मध्यम श्रेणी में हैं। दूसरी ओर, एक भी राज्य निम्न मानव विकास (0.550 से कम) की श्रेणी में नहीं है। यह भारत सरकार और राज्य सरकारों के निरंतर प्रयासों के कारण हुआ है। यदि हम राष्ट्रीय औसत के संबंध में स्थिति की तुलना करें तो दस राज्य ऐसे हैं जो राष्ट्रीय औसत से नीचे हैं। इन राज्यों को ऊपर दी गई तालिकाओं के माध्यम से पहचानें। इस स्थिति के लिए जिम्मेदार कारणों को भी जानने का प्रयास करें।

पाठगत प्रश्न 23.3

1. भारत के किन्हीं पांच राज्यों के नाम लिखिए जो एच.डी.आई. (HDI) में राष्ट्रीय औसत से नीचे हैं।

2. भारत के उन तीन राज्यों के नाम लिखिए जो एच.डी.आई. (HDI) की उच्च श्रेणी में हैं।

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) की अवधारणा को प्रो महबूब अल हक द्वारा प्रतिपादित किया गया था। 1990 के बाद से यू.एन.डी.पी. (UNDP) द्वारा प्रतिवर्ष मानव विकास रिपोर्ट प्रकाशित की जाती है जो दुनिया भर के लगभग सभी देशों में मानव विकास की स्थिति को दर्शाती है। एच.डी.आई. एक समग्र सूचकांक है जो किसी देश में मानव विकास के तीन बुनियादी आयामों की औसत उपलब्धियों को मापता है। वे लंबे और स्वस्थ जीवन, ज्ञान और मानक जीवन स्तर हैं। आर्थिक विकास और मानव विकास के बीच मूल अंतर यह है कि आर्थिक विकास पूरी तरह से आय में वृद्धि पर केंद्रित है जबकि मानव विकास मानव जीवन के सभी पहलुओं के विस्तार पर जोर देता है। एच.डी.आई. में, आर्थिक स्थिति आवश्यक तत्वों में से एक है। HDI के अलावा, UNDP द्वारा विभिन्न प्रकार के सूचकांकों का निर्माण और प्रकाशन किया जाता है। कुछ महत्वपूर्ण सूचकांक हैं: गरीबी सूचकांक, लैंगिक विकास सूचकांक, लैंगिक सशक्तीकरण मापन सूचकांक आदि।

मानव विकास रिपोर्ट- 2021 के अनुसार मध्यम स्तर की श्रेणी में भारत का स्थान लगभग तालिका में सबसे नीचे 132वां है। भारत को मानव विकास के निचले पायदान पर रखने वाले कारणों में जनसंख्या में तेजी से वृद्धि, वयस्क निरक्षरों की बड़ी संख्या, कम सकल नामांकन अनुपात, शिक्षा और स्वास्थ्य पर अपर्याप्त सरकारी व्यय, कम वजन वाले बच्चों के साथ-साथ कुपोषित लोगों की बड़ी संख्या, स्वच्छता की बहुत खराब सुविधाएं और आवश्यक जीवन रक्षक दवाओं तक कम पहुंच आदि है। इसलिए स्वास्थ्य में सुधार, शैक्षिक विकास और जीवन स्तर में वृद्धि के साथ गरीबी के स्तर में कमी की तत्काल आवश्यकता है।

पाठांत प्रश्न

1. मानव विकास सूचकांक, मानव गरीबी सूचकांक तथा लैंगिक विकास सूचकांक में अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. मानव विकास के किन्हीं चार कारणों की व्याख्या कीजिए।
3. भारत को मानव विकास सूचकांक तालिका में लगभग सबसे नीचे रखने के लिए उत्तरदायी किन्हीं चार कारकों का उल्लेख कीजिए।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

23.1

1. मानव विकास सूचकांक एक समग्र सूचकांक है जो मानव विकास के तीन बुनियादी आयामों जैसे लंबे और स्वस्थ जीवन, ज्ञान और मानक जीवन स्तर में किसी देश की औसत उपलब्धियों को मापता है।

2. आर्थिक विकास पूरी तरह से आय में वृद्धि पर केंद्रित है जबकि मानव विकास मानव जीवन के सभी पहलुओं के विकास और विस्तार पर जोर देता है।

3. (i) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा द्वारा मापा गया लम्बा और स्वस्थ जीवन।

   (ii) ज्ञान को वयस्क साक्षरता दर और प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक नामांकन के संयुक्त अनुपात द्वारा मापा जाता है

   (iii) मानक जीवन स्तर को प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (डालर में प्रति व्यक्ति की क्रय शक्ति) से पाया जाता है।

23.2

1. 191 देशों में से 132

2. 0.849

23.3

1. (i) हरियाणा

   (ii) हिमाचल प्रदेश

   (iii) कर्नाटक

   (iv) केरल, कोई अन्य (कोई भी) तीन)

टिप्पणी

2. (i) बिहार

(ii) मध्य प्रदेश

(iii) उत्तर प्रदेश

(iv) राजस्थान, कोई अन्य (कोई भी तीन)

मॉड्यूल-10

समकालीन मुद्दे तथा चुनौतियाँ

24. सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी)

25. पर्यावरण, स्वास्थ्य और स्वच्छता